Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M.A - II Sem Philosophy
CC-09 - Indian Linguistic trends

"Vyanjana"

('व्यंजना')

'अंजन' शब्द में 'वि' उपसर्ग लगाने पर 'व्यंजना' शब्द बनता है। वि का अर्थ विशेष और अंजन का अर्थ काजल है। इसी प्रकार शब्द के सौन्दर्य की वृद्धि के लिए व्यंजना का प्रयोग किया जाता है। अतः व्यंजना को एक विशेष प्रकार का अर्थ कहा जाता है। इस अर्थ का प्रयोग साधारणतः काव्य में होता है। किन्तु हम अपने दैनिक जीवन में भी बोल-चाल की भाषा में इसका प्रयोग करते हैं। इस अर्थ का प्रयोग उस समय होता है जब किसी शब्द को वाच्यार्थ (अभिधा) और लक्ष्यार्थ (लक्षणा) द्वारा नहीं जाना जा सकता है। तात्पर्य यह है कि अभिधा और लक्षणा की सीमा के परे होने पर ही व्यंजना का प्रयोग होता है। जैसे :- सूर्य डूब चुका है। इस वाक्य का अभिधा अर्थ स्पष्ट है कि शाम हो गयी है। परन्तु इसका लक्षणा अर्थ है कि किसी विशेष क्षेत्र (साहित्य, दर्शन, गणित, विज्ञान, कला, राजनीति, संगीत, अर्थशास्त्र आदि) का लब्धप्रतिष्ठित व्यक्ति मर चुका है। किन्तु इस वाक्य का अन्य अर्थ भी है जो अभिधा और लक्षणा के परे है। जैसे - छात्रों के संदर्भ में इस वाक्य का अर्थ है कि अब पढ़ाई बन्द करो। चरवाहों के संदर्भ में इसका अर्थ है कि पशुओं को चारागाह से वापस कर घर

15 WED APR

लाओ। इनमें से वाक्य के अनेक अर्थ हैं और ये सभी अर्थ संदर्भगत हैं। अतः व्यंजना का आधार अनेकार्थक शब्द हैं और व्यंजना का क्षेत्र असीम है। इसलिए व्यंजना को परिभाषित करना असम्भव है। फिर भी काम चलाऊ परिभाषा के रूप में व्यंजना को किसी शब्द का वह अर्थ माना जा सकता है जो कभी अभिधा अर्थ और कभी लक्षणा अर्थ पर आधारित होता है और कभी अभिधा और लक्षणा से स्वतंत्र होकर निरपेक्ष अर्थ प्रदान करता है।" यहाँ 'निरपेक्ष' का अर्थ तटस्थ नहीं है, बल्कि संदर्भगत है। विश्वनाथ पंचानन के अनुसार जब अभिधा और लक्षणा शब्दशक्तियाँ क्रमशः वाच्य और लक्ष्य अर्थ का बोध करा लेने के बाद विरत हो जाती हैं तब जो शक्ति अन्य अर्थ का बोध कराती है उसे व्यंजना शक्ति कहते हैं। यह शक्ति शब्द में भी रहती है और वाच्य, लक्ष्य तथा व्यंग्य अर्थों में भी। स्पष्ट है कि व्यंजना का क्षेत्र अपेक्षाकृत व्यापक है।

व्यंजना के प्रकार :—

अलंकारशास्त्रियों ने व्यंजना के दो भेदों का उल्लेख किया है — (1) शाब्दी व्यंजना (2) आर्थी

व्यंजना। विश्वनाथ ने कहा है जब व्यंजना की उक्त परिभाषा से स्पष्ट कहा जाता है कि व्यंजना शक्ति शब्द में भी रहती है और शब्द के अर्थ में भी। इसलिए व्यंजना को शाब्दी और आर्थी दो वर्गों में विभाजित किया जाता है। जब व्यंजना शक्ति शब्द में हो अर्थात् ध्यान शब्द द्वारा अर्थ की अभिव्यक्ति हो, तो उसे शाब्दी व्यंजना कहते हैं। जैसे— "भूधर भी झुक रहे।" भूधर का अर्थ है पर्वत। पर्वत की ऊँचाई इतनी अधिक होती है कि उस ऊँचाई तक विरला ही जा पाता है। किन्तु भूधर का अर्थ राजा (शासक) भी होता है। राजा या शासक तक आम जनता की पहुँच नहीं होती। जिस तरह दूर से ही पर्वत देखने लायक होता है, उसी प्रकार राजा या शासक से दूर रहना ही अच्छा है। शासक की नजदीकी प्रायः हानिकारक होती है। अतएव इस वाक्य का व्यंजनार्थ "राजा (शासक) से अच्छी-खासी दूरी बनाकर रखो" है। यहाँ वाक्य का अर्थ एक शब्द (भूधर) पर आधारित है। इसलिए यह शाब्दी व्यंजना है। परन्तु "सूर्य डूब चुका है।" वाक्य का अर्थ सम्पूर्ण वाक्य के अर्थ पर निर्भर करता है न कि एक शब्द 'सूर्य' के अर्थ पर। इसलिए इस वाक्य का अर्थ आर्थी व्यंजना कहलाता है। तात्पर्य यह

17 FRI APR

है कि सार्थी व्यंजना वह है
जो व्यंजना शक्ति सम्पूर्ण वाक्य
के अर्थ में निहित रहती है।
शाब्दी व्यंजना :- शाब्दी
व्यंजना शब्द की अभिधा और लक्षणा
शक्तियों पर निर्भर है, इसलिए इसके
दो प्रकार माने गये हैं - अभिधामूल
व्यंजना तथा लक्षणामूलक व्यंजना।
जब व्यंजना शब्द की अभिधा शक्ति
पर आधारित रहती है तो उसे अभिधामूलक
व्यंजना कहते हैं। और व्यंजना लक्षणा
शक्ति पर निर्भर करती है, तो वह लक्षणामूल
क व्यंजना कहलाती है। "भूधर से
दूर रहो" वाक्य का अर्थ अभिधामूलक
व्यंजना से अभिहित होता है। 'भूधर'
का अभिधा अर्थ 'पर्वत' है। शासक (राजा)
भी पर्वत के समान ऊँचे व्यक्तित्व वाला
कठोर पुरुष होता है। वह अपने हृदय
में पर्वत के समान ही सरल और निश्चल
होता है। इसलिए उसे 'भूधर' कहा जाता
है। यहाँ शब्द 'भूधर' के मूल अर्थ
(अभिधा) द्वारा ही व्यंजना अर्थ को
स्पष्ट किया गया है। इसलिए इस
वाक्य का अर्थ अभिधामूलक व्यंजना है।
भूधर का एक से अधिक अर्थ है। यही
कारण है कि विश्वनाथ ने 'अनेकार्थ
शब्दों के संयोग, वियोग आदि के आधार
पर एक अर्थ के निर्धारण के पश्चात
अन्य अर्थ की प्रतीति करानेवाली
शक्ति को अभिधामूलक व्यंजना

जाता है। जैसा, अर्थ का सम्पूर्ण आलंकारिक अर्थ है। इस श्लोक की अभिव्यक्ति में चार तत्वों पर विचार करते हैं। सिद्धान्त प्रस्तुत की अभिव्यक्ति में भर्तृहरि ने चौदह तत्वों का उल्लेख किया है। वे तत्व हैं — संयोग, वियोग, साहचर्य, विरोध, अर्थ, प्रकरण, लिङ्ग, अन्य शब्द की सन्निधि, सामर्थ्य, औचित्य, देश, काल, व्यक्ति और स्वर। उन्होंने 'स्वर' के बाद "आदि" शब्द का भी प्रयोग किया है। इसका तात्पर्य है कि इन चौदह तत्वों के अतिरिक्त चेष्टा आदि अनेक गौण तत्वों को भी अभिधामूलक व्यंजना की अभिव्यक्ति में सहायक माना जाता है। वस्तुतः ये सभी तत्व अनेकार्थक शब्दों के अर्थ को नियंत्रित करते हैं। मम्मट ने भी इन तत्वों को अभिधामूलक व्यंजना का आधार माना है। अभिधामूलक व्यंजना का प्रयोग अनेकार्थक शब्दों के अर्थ को स्पष्ट और सुनिश्चित करने के लिए होता है।

लक्षणामूलक व्यंजना :— "गंगा में गाँव है" यहाँ गंगा का अभिधार्थ नहीं होने से लक्षणा से लिया गया है अर्थात गंगा के किनारे गाँव है। किन्तु 'गंगा' शब्द की विशेषता के आधार पर इस वाक्य का अर्थ होता है कि "गाँव शीतल, शान्त और पवित्र है।" अतः यहाँ लक्षणामूलक व्यंजना है, क्योंकि यहाँ गंगा का

से लिया गया है। अर्थ शीतलता, शान्ति और पवित्रता वती लक्षणा भी कहा जाता है। इस अर्थ को प्रयोजन लक्षणामूलक व्यंजना प्रयोजनवती लक्षणा का पर्याय है। प्रयोजनवती लक्षणा का प्रयोग किसी निश्चित प्रयोजन या उद्देश्य के लिए किया जाता है। अतः लक्षणामूलक व्यंजना प्रयोजनवती लक्षणा का पर्याय है। प्रयोजनवती लक्षणा का प्रयोग किसी निश्चित प्रयोजन या उद्देश्य के लिए किया जाता है। अतः लक्षणामूलक व्यंजना भी प्रयोजन या उद्देश्य के लिए ही प्रयुक्त होती है। रूढ़ि लक्षणा के अतिरिक्त लक्षणा के जितने भी प्रकार बतलाये गये हैं वे सभी प्रयोजनवती लक्षणा के अंतर्गत ही आते हैं। अतएव लक्षणामूलक व्यंजना के भी कई प्रकार हो जाते हैं जिन्हें इस तालिका से दिखलाया जा सकता है—

लक्षणामूलक व्यंजना (प्रयोजनवती लक्षणा)

- गौण
  - सारोपा
  - साध्यवसाना
- शुद्ध
  - उपादान
    - सारोपा
    - साध्यवसाना
  - लक्षणे
    - सारोपा
    - साध्यवसाना

[illegible]

[illegible] आगे [illegible] विशिष्ट [illegible] पर [illegible] है [illegible] विशेषता [illegible]

[illegible] है। [illegible] सत्य है — [illegible]

[illegible] जीवन [illegible]

[illegible] आदि

[illegible] होता है [illegible]

[illegible] जाता है। प्रतिपाद्य विषय को

[illegible] होता [illegible] है। काव्य का

तात्पर्य होता है [illegible]

जाता है। प्रतिपाद्य विषय को

22 WED
APR

जो पृथक कहा गया है
का तात्पर्य ध्वनि-विकार है। वाच्य
शब्द का मुख्य अर्थ है। [illegible]
वाक्य का तात्पर्य वक्ता और श्रोता
विभक्त से भिन्न वाक्य है। अन्य वाक्य
और वाच्य के सान्निध्य को [illegible]
वाक्य सान्निध्य कहा गया है।
प्रस्ताव का तात्पर्य प्रकरण और तात्पर्य
से है। मम्मट ने इन्हें भी [illegible] सभी
तत्वों या शर्तों को आर्थी व्यंजना
के लिए आवश्यक माना है। आर्थी
व्यंजना का विषय (वाच्य
लक्ष्य व्यंग्य अर्थ) का अभिव्यक्ति
प्रत्यार्थक व्यापार भी माना है।
इन तत्वों के आधार पर आर्थी
व्यंजना के दस भेद किए गए हैं।
वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ
के आधार पर प्रत्येक के [illegible]
व्यंजनाओं के तीन-तीन भेद किए गए हैं।
इस प्रकार आर्थी व्यंजना के कुल
भेद तीस हो जाते हैं।